







छोड़कर सिर्फ भगवान का ध्यान करना चाहिए। हम भगवान के ही अंश हैं और जब हम भगवान से जुड़ते हैं तो अकेलेपन की भावना खत्म हो जाती है। भगवान से जुड़ने के बाद स्वार्थ, अहंकार, लापरवाही जैसी बुराइयों दूर होती हैं और हम शांत हो जाते हैं। भावक गीता हमें अकेलेपन की एक भ

नहीं, बल्कि आत्म-संवाद का अवसर मानने का संदेश देती है। जब भी अकेलापन महसूस होता है, हमें खुद का संसकार चाहिए। भगवान का ध्यान करना चाहिए। जब हम अपने भीतर की शांति और अपनी आत्मा से जुड़ते हैं तो हमें एहसास होता है कि हम कभी अकेले नहीं हैं।



